Discuss The objective characteristics and relevance of the non-Alignment ?

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप में परिवर्तन लाने वाले तत्वों में गुटनिरपेक्षता उद्देश्य नवोदित राष्ट्रों की स्वाधीनता की रक्षा करना एवं युद्ध की सम्भावनाओं को रोकना। गुटनिरपेक्ष अवधारणा के उदय की पीछे मूल धारणा यह थी कि साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से मुक्ति पाने वाले देशों को शक्तिशाली गुटों से अलग रखकर उनकी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखा जाए।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संसार दो विरोधी गुटों सोवियत संघ और अमेरिकी गुटे में विभक्त हो चुका था और दूसरी तरफ एशिया एवं अफ्रीका के राष्ट्रों का स्वतंत्र अस्तित्व उभरने लगा था।

वस्तुतः शीतयुद्ध के राजनीतिक ध्रुवीकरण ने गुटनिरपेक्षता की समझ को तैयार किया क्योंकि ये राष्ट्र न तो सोवियत साम्राज्यवाद और नहीं अमेरिकी पूंजीवाद को स्वीकार करना चाहते हैं लम्बे औपनिवेशिक आधिपत्य से स्वतंत्र होने के लम्बे संघर्ष के बाद किसी दूसरे के आधिपत्य को स्वीकार कर लेना नवोदित राष्ट्रों के लिए एक नई बात सी थी। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वे एक ऐसी भूमिका की तलाश कर रहे थे जो उनके आत्म सम्मान तथा क्षमता के अनुरूप हो।

परन्तु फिर भी इन राष्ट्रों को गुट-निरपेक्षता को स्वीकार करना पड़ा।

Meaning and Definition :- NAM. [अर्थ और परिभाषा -NAM]

गुट-निरपेक्षता आन्दोलन पर किसी भी प्रकार की विवेचना तब तक निश्चित रूप से अपूर्ण है जब तक कि हम गुट-निरपेक्षता के पद की व्याख्या नहीं कर ले।

गुट-निरपेक्षता शब्द जिस नीति अथवा दृष्टिकोण का द्योतक बन गया है उसका बोध कराने के लिए यही एकमात्र शब्द नहीं है। पश्चिमी लेखकों ने इस शब्द को तटस्थता या तटस्थवाद समझते हैं।

Scanned with CamScanner

जार्ज लिस्का ही प्रथम विद्वान थे जिन्होंने गुटनिरपेक्षता पद को वैज्ञानिक ढंग से व्याख्या किया। उनका कहना था गुटनिरपेक्षता तटस्थता से भिन्न है जो कि वास्तविक युद्ध में सम्मिलित नहीं होता है।

~~जार्ज लिस्का ही~~

जार्ज श्वाजेनबर्गर ने गुटनिरपेक्षता को स्पष्ट करने के लिए 6! पदों का उल्लेख किया है। — अलगाववाद, अप्रतिबद्धता, तटस्थता, तटस्थीकरण, एक पक्षवाद, तथा असंलग्नता।

जिसमें सबसे महत्वपूर्ण पद तटस्थता है जिसका अर्थ होता है - दो पक्षों के युद्ध में किसी ओर नहीं भाग लेना अर्थात तटस्थ रहना बिल्कुल सेपरेट रहना है। शीत युद्ध से पृथक्करण ही गुटनिरपेक्षता का सार तत्व है। यह नीति चुप्पी लगाकर बैठ जाने की या अन्तर्राष्ट्रीय मामलों से सन्यास लेनी की नहीं है बल्कि इसके अन्तर्गत स्वतंत्र राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं।

~~Achievments of Non Alignment~~

Achievments of Non Alignment :— गुटनिरपेक्षा की उपलब्धि

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में गत पचास वर्षों से कार्यरत है क्योंकि अब गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन बन चुका है इसका कार्य क्षेत्र बिल्कुल व्यापक हो गया है। बेलग्रेड में प्रथम शिखर सम्मेलन में 25 देशों ने भाग लिया और 1 सितम्बर 1998 में डरबन में आयोजित 12वें शिखर सम्मेलन के बाद इस आन्दोलन के सदस्य देशों की संख्या 115 हो गयी है।

अतः गुट-निरपेक्ष आन्दोलन की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं

(i) गुटनिरपेक्षता को दोनों गुटों द्वारा मान्यता :— गुटनिरपेक्षता एक नयी संकल्पना है। इसने उपनिवेशमूल प्रक्रिया को त्वरित किया है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने विश्व के विभिन्न भागों में

Scanned with CamScanner

स्वतंत्रता संग्राम को प्रबल बनाया है यही कारण है आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उपनिवेश वाद एक मृत शक्ति बन गया है।

अतः विश्व को दो महाशक्तियों के गुटों द्वारा इसे मान्यता प्राप्त हो चुकी थी। साम्यवादी राष्ट्रों का दृष्टिकोण 1953 में जोसेफ स्टालिन की मृत्यु के बाद से बदलना शुरू हो गया था तथा 1956 में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं सदी में स्वीकार किया सचमुच गुट निरपेक्ष स्वतंत्र है अतः अंत में दोनों गुटों द्वारा इसे मान्यता मिली गयी।

विश्व राजनीति में संघर्षों का टलना :—

गुट-निरपेक्षता की दूसरी सम्भव उपलब्धि यही रही कि इसके प्रभाव से विश्व के कुछ विकट संघर्ष टल गए जिससे यह समाधान हो गया कि तीसरा विश्व युद्ध नहीं हो सका। गुटनिरपेक्ष राष्ट्र यह दावा कर सकते है कि यह गलत नहीं होगा कि उन्होंने न्यूक्लीय अस्त्रों के सबसे खतरनाक दशक में अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण ~~अपना~~ योगदान दिया है। दोनों गुटों के योजनाओं के विपरीत बहुत से देशों ने राष्ट्र-समाज को हिस्सों में बंटने से रोक दिया।

i) शीत-युद्ध को शस्त्र-युद्ध में परिणत होने से रोकना :—

बहुत से गुट निरपेक्ष देश दोनों गुटों और सम्बन्धित शक्तियों के बीच सद्भावना हेतु तथा सम्पर्क के माध्यम का काम करने को तैयार थे। दूसरे तरह शीत युद्ध के दोनों पक्षों के बीच गलत फहमियाँ दूर करने में सहायता मिली। कभी-कभी ऐसा अनुभव हुआ कि न्यूक्लीय ~~विहीन~~ विध्वंस के कगार पर है।

अतः शीत युद्ध से तीसरे विश्व युद्ध की सम्भावना कम हो गयी।

निःशस्त्रीकरण और अस्त्र नियंत्रण की दिशा में प्रगति :—

निःशस्त्रीकरण और अस्त्र नियंत्रण के लिए ~~बाद~~ बात-चीत करने में गुटनिरपेक्ष देशों ने जो भूमिका निभाई है उसमें उन्हें एकदम सफलता तो नहीं मिली है परन्तु

Scanned with CamScanner

उन लोगों को इस बात का एहसास जरूर हो गया कि विश्व शांति को बढ़ावा देने की सारी चर्चा के सामने अस्त्र-शस्त्र बढ़ाने की बे-लगाम दौड़ कितनी --- ~~खतरनाक~~ खतरनाक है।

अतः गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने निःशस्त्रीकरण पर नियंत्रण में काफी हद तक सिद्ध हुआ है।

v) विश्व समाज के लिए उन्मुक्त वातावरण का निर्माण :—
नवोदित कमजोर राष्ट्रों को महाशक्तियों के चंगुल से निकालकर उन्हें स्वतंत्रता के वातावरण में अपना अस्तित्व बनाए रखने का अवसर गुटनिरपेक्ष ने प्रदान किया है अतः गुटनिरपेक्ष ने विश्व समाज को एक उच्च वातावरण दिया है।

vi) संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वरूप को रूपांतरित करना :—
गुट निरपेक्षता की नीति और गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र संगठन को कुछ दृष्टियों से हमेशा-हमेशा के लिए रूपांतरित करने में सहायता दी है एक तो अपनी संख्या के कारण दुसरे शीत युद्ध में अपनी अधिक तटस्थ दृष्टि और भूमिका के कारण गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र संघ एवं संगठन को छोटे राज्यों के बीच शांति कायम ~~संगठन~~ क रखने वाले राष्ट्रों के रूप में सहायता दिया।

अतः Nam के द्वारा इन सारी उपलब्धियाँ प्राप्त हुई।

vii) नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मांग :—
आज कल गुटनिरपेक्ष राष्ट्र नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मांग कर रहे हैं। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के दायरा में जुलाई 1962 में आयोजित आर्थिक विकास की समस्याओं पर सम्मेलन में पहली बार आर्थिक विकास का उल्लेख किया ~~गया~~ गया था।

The Fudhure of Non Alignment : Relevance :— प्रासंगिता
गुटनिरपेक्षता का भविष्य : प्रासंगिकता :—
1990 के दशक में विशेषकर सोवियत संघ के विघटन के बाद तथा संयुक्त राज्य अमेरिका एवं तत्कालीन सोवियत संघ के बीच के शीत युद्ध की समाप्ति के बाद गुट निरपेक्षता की प्रासंगिता एक विवाद का

Scanned with CamScanner

विषय बन गयी। अनेक पाश्चात्य देशों ने यह कहा कि गुट निरपेक्ष आन्दोलन का उदभव दो बड़ी शक्तियों के बीच शीत युद्ध के प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुआ। परन्तु गुटनिरपेक्षता विश्व राजनीति के विरोध रहित वर्तमान संदर्भ में अब अनुपयोगी हो गया है। जो कि शीत युद्ध समाप्त हो गया और एक नयी तनाव शिथिलता आ गयी तथा सोवियत संघ रूस के रूप में गठित कर गया वारसा संधि संगठन अब विघटित हो गयी तथा रूस संयुक्त राज्य अमेरिका का अनुयायी बन गया। अतः गुट निरपेक्षता को बड़ी शक्तियों से दूर रहने में अब कोई प्रासंगिता नहीं है।

1992 में गुट निरपेक्ष आन्दोलन के देशों के विदेश मंत्री के सम्मेलन में क्लिंटर ने बड़े जोर शोर से कहा कि सोवियत संघ का विघटन हो गया वारसा संधि की समाप्ति हो गयी एवं शीत युद्ध के खत्म होने पर गुट निरपेक्ष आन्दोलन को विघटित कर देना चाहिए। इस प्रकार शीत युद्ध के उत्तरकाल में विश्व राजनीति में इसका कोई उपयोगिता नहीं है।

क्लिंटर के इस प्रकार के तर्क के गुट-निरपेक्ष देशों के विदेश मंत्रियों के सम्मेलन में अधिकांश सदस्यों द्वारा इसे अस्वीकार कर दिया गया। तथा इस बात को स्वीकार किया गया कि आज भी अनेक गुट निरपेक्ष देश आर्थिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वे आज भी विकसित राष्ट्रों के राष्ट्रीय संघों द्वारा शोषित किये जाते हैं। वे आज भी नव उपनिवेशवाद के अधीन है। और उनकी स्वतंत्रता अल्प आधार पर लटकी हुई है।

अतः गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के अधिकांश सदस्य राज्य इस बात से सहमत नहीं हुए की गुट-निरपेक्षता अपनी प्रासंगिता को खो दिया है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन सिर्फ नाकारात्मक अवधारणा पर आधारित नहीं है जो सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच हुए शीत युद्ध के बाद अपनी प्रासंगिता को खो देगा।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के निम्नलिखित प्रासंगिता है

(i) गुट निरपेक्ष आन्दोलन ने संप्रभु राष्ट्र राज्य व्यवस्था के शास्त्रीय सिद्धांत को एक समाधान का प्रस्ताव देता है गुट निरपेक्ष आन्दोलन ~~में~~ सभी राज्य समान स्वतंत्र एवं संप्रभु है गुट निरपेक्ष आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लोकतांत्रिकरण से सम्बद्ध है

(ii) गुट निरपेक्ष आन्दोलन सम्प्रभु राज्य व्यवस्था की एक दूसरी परम्परागत विशेषता का विरोध करता है अर्थात अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध में शक्ति का प्रयोग परन्तु संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अनुरूप शक्ति का प्रयोग किया जा सकता है

(iii) ~~अ~~ गुट-निरपेक्ष आन्दोलन बड़ी शक्तियों के एकल प्रभुत्व वाद, नव उपनिवेशवाद अथवा द्वितीय-उपनिवेशवाद का समर्थक है यह दक्षिण बनाम दक्षिण वर्ता को प्रोत्साहित करता है

(iv) अनेक समीक्षकों के अनुसार बड़ी शक्तियों के बीच तनाव शिथिलता के कारण गुट निरपेक्ष आन्दोलन अप्रासंगिक बन गया है

~~जीवन में जड़ें से ली है अनुभव यह प्रमाणित~~

(v) गुटनिरपेक्षता ~~आन्दोलन~~ अपने सदस्य राज्यों के आंतरिक जीवन में जड़े ले ली है अनुभव यह प्रमाणित करता है कि आंतरिक राजनीतिक परिवर्तनों से बिना प्रभावित हुए निरपेक्षता उन राज्यों मे एक बौद्धिक नीति के रूप में कायम रहता है Ex-India

(vi) गुट निरपेक्ष आन्दोलन हमेशा से निःशस्त्रीकरण की मांग का समर्थन किया है यह विस्तृत एवं विश्वव्यापी नाभकीय निःशस्त्रीकरण की मांग पर अडिग रहा है

(vii) प्रो० एम० एस० राजन कहते है कि गुटनिरपेक्ष देश बड़ी शक्तियों के बीच की प्रतियोगिता से बाहर है परन्तु बड़ी शक्तियों की विश्व राजनीति को प्रभावित करने की इच्छा अभी भी कायम है

इस प्रकार गुट-निरपेक्ष आन्दोलन तनाव शिथिल अथवा शीत युद्ध से अधिक अर्थपूर्ण एवं

Scanned with CamScanner

सकारात्मक है। इसलिए प्रासंगिक है।

निष्कर्ष :-

हम देखते हैं कि विश्व राजनीति में या दो महाशक्तियों के बीच गुट निरपेक्ष आन्दोलन का भावात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलू हैं यह सत्य है कि गुट निरपेक्ष आन्दोलन को बहुत सारे चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। उदाहरण स्वरूप सैन्य दबाव गुट निरपेक्ष देशों के बीच आपसी मतभेद, आर्थिक पिछड़ेपन, अनेक गुट निरपेक्ष देशों की राजनीतिक ---- अस्थिरता इत्यादि।

अतः गुट निरपेक्ष आन्दोलन विश्व --- राजनीति में एक नैतिक शक्ति के रूप में कायम रहा है। गुट निरपेक्ष राज्य एक नई राजनीतिक व्यवस्था की निरन्तर मांग कर रहा है। जिसमें लोकतांत्रिकरण एक अनिवार्य गुण होगा। सभी बड़े और छोटे राज्य आधिकार के नाम पर एवं समानता के आधार पर आपसी लाभ के आधार पर गुट-निरपेक्ष आन्दोलन का साथ दे रहे हैं।

अतः आज भी वर्तमान में गुट निरपेक्ष आन्दोलन विकासित देशों एवं पिछड़े हुए देशों की स्वतंत्रता हितों और उपनिवेशवाद से मुक्त करने का संकल्प होता है।

सारांश :-

उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर गुट-निरपेक्ष आन्दोलन के विभिन्न पहलूओं पर विचार किया गया। इसके सिद्धांत संगठन सदस्यता उपलब्धियां एवं विफलताएँ अतः प्रासंगिकता सभी की व्याख्या व्यवस्थित ढंग से की गई है।

गुट-निरपेक्ष आन्दोलन जिसकी शुरुआत महज 28 सदस्यों के साथ की गई आज अब इसकी सदस्य संख्या 115 हो गयी है।

Scanned with CamScanner

गुट-निरपेक्ष आन्दोलन को द्वितीय विश्व युद्ध के उत्तरार्द्धकालीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक प्रबल भूमिका निभाने का श्रेय दिया जाता है। गुट निरपेक्ष आन्दोलन एक बेहतर ~~विश्व~~ व्या व्यवस्था का आकार दे सकता है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के ने आधे विश्व जो गरीब देशों को समावेश करता है प्रवक्ता के रूप में बहुत उपयोगी भूमिका निभायी है।

परन्तु गुट-निरपेक्ष आन्दोलन के सिद्धांतो को कुछ विकृतियों ने आन्दोलन में संकट पैदा कर दिया है।

दिसम्बर 1979 में गुट निरपेक्ष आन्दोलन ने अफगानिस्तान में सोवियत आतिक्रमण की निन्दा करने में काफी विफल रहा था।

अतः यही कारण है कि कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों के आधार पर गुट निरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है।

Scanned with CamScanner